मुखपृष्ठ
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यसुधा
वर्ष: 4, अंक 71, अक्टूबर(द्वितीय), 2019

दशानन

ड़ा.नीना छिब्बर

आदिकाल से सत्-असत्, जय -पराजय, धर्म-अधर्म, लाभ-हानि,यश-अपयश,मानवता-दानवता,करूणा-क्रूरता, अहम और विनम्रता के बीच ना खत्म होने वाली लड़ाई चली आ रही है। कई क्षेत्र तो ऐसे हैं कि दो प्रवृत्तियों में भेद की रेखा भी क्षीण है। मानव के मस्तिष्क में जो बाते या कथ्य अनवरत रेखांकित हो जाती हैं ।उन्हें वो सुविधानुसार जन मानस में चित्रित कर देता है। भारत की संस्कृति में भी कुछ चरित्र हैं जिन के निश्चित व्यवहार, स्वभाव, आचरण गुण-अवगुण हम मान कर उस व्यक्ति विशेष का अध्ययन करते हैं। राम ,रावण, कृष्ण, कंस ,दुर्योधन, ,हनुमान, अहिल्या, शुरूपनखा, बुद्ध ऐसे अनेकों नाम हैं जो सुनते ही एक विशेष आकृति व चरित्र सामने आता ही है। उस से हट कर हमारी सोच जाती भी नहीं है।हर साल दशहरे पर रावण -दहन होते देखना ,भारत के अधिकांश राज्यों के लिए सामान्य दृश्य है,जिसे बुराई पर अच्छाई की विजय के रूप में देखा जाता है ।रावण बुराई का प्रतीक,हर साल अग्नि बाण से अंत और लोगों का प्रसन्न होना।राक्षस,खलनायक, अभिमानी, अहमी ,सोने की लंका को अपने घमंड़ के कारण समाप्त करने वाला आदि-आदि है।दशाशन रावण की एक छवि मन मस्तिष्क में चिर स्थाई है।

उसी दशानन की एक विस्तृत सकरात्मक छवि भी प्रस्तुत होनी चाहिए। लंकापति रावण ब्रहमा जी के पुत्र पुलस्त्य व पुलस्त्य के पुत्र विश्रवा और पत्नी केकसी के पुत्र थे। रावण के नाना सुमाली ने कुबेर से लंका पुनः प्राप्त करने के लिए अपनी बेटी को विश्रवा के पास पुत्र प्राप्ति के लिए भेजा था।

विश्रवा और केकसी के तीन पुत्र और एक पुत्री हुई।वरूण केतु(रावण),विभिषण, कुंभकर्ण और पुत्री शूर्पणखा।एक बार केतु घूमते हुए वहाँ आए और वरूण केतु को देख कर कहा कि यह रावण बनेगा । इसके पीछे कथा यह है कि राज्याभिषेक के समय जब मुनि कूक्कुट ने राज्याभिषेक करने से मना कर दिया तब महात्मा भुंजु ऋषि ने वह कार्य संपन्न किया। उसी दिन उपस्थित राजाओं ने,ऋषियों ने,आचार्यों ने, समाज ने वरूण केतु को रावण नाम दिया ।ब्राहमण और वेदों का का पंड़ित होने के कारण रावण नाम नियुक्त हुआ।रावण नाम का अर्थ है महादानी, महा बुद्धिमान।यह अपशब्द नहीं है।

इसी प्रकार रावण के दशानन बनने की कथा है।रावण ने ब्रह्मा जी से दस दिशाओं का ज्ञान देने के लिए अनुरोध किया।जो निम्न हैं।

1. प्राचीदिक्*(पूर्व दिशा).. इसका देवता अग्नि है जो ऊपर (प्रगति)व प्रकाश की और ले जाती है।अग्नि का संबंध नेत्रों से है।जगत में धौ और सूर्य से है।

2. दक्षिण दिक्(दक्षिण दिशा)...इसका देवता इंद्र् हैं।जितना भी विधुत का भंडार होता है वह इसी दिशा में होता है।मेघों में जो आभा रहती है ,उसका संबंध चंद्रमा से रहता है।

3. प्रतिचि दिक्(पश्चिम दिशा)....इसका देवता वरूण है।यहाँ अन्न का भंडार होता है।

4. उदिचि दिक्(उत्तर दिशा)...इसका देवता सोम है।सोम को पान करने वाला योगी बन जाता है। सोम कहते हैं विधा(ज्ञान)को कहते हैं। विधा का मंथन करने पर जो ज्ञान मानव की आभा में रमण करता है उसे सोम कहते हैं।व्यष्टि को समष्टि में परिणत कराने का नाम सोमरस कहलाता है।

5. ध्रुवा(पृथ्वी)... इसका देवता विष्णु है जो पालन करता है। यह विभिन्न वनस्पतियों व प्राणीमात्र का पालक है।

6. ऊध्वा(अंतरिक्ष).. इसका देवता बृहस्पति है जो ज्ञान की वृष्टि करता रहता है।

7. ईषाण कोण..इसका देवता धौ सूर्य है।

8. दक्षिणाय कोण... इसका देवता शचि और अदिति हैं।

9. पश्चिम कोण...इसका देवता मेघ है।

10. उदीची कोण ...इसका देवता ज्ञान है।

जब वरूण केतु ने सभी दस दिशाओं पर रहकर अनुसंधान किया और इनके विज्ञान को भी जाना ।तब उसे दशानन नाम मिला।इन दिशाओं का रावण ने जीवन में क्रियात्मक उपयोग किया। इसी प्रकार दशानन रावण ने करीब दस हजार वर्ष तक तपस्या की।1000वर्ष पूरा होने पर एक मस्तष्क काट कर अग्नि में होम देता था। इस प्रकार नौ हजार वर्ष तक नित्य एक -एक सर काट कर नौ सर होम को भेंट किए।ब्रह्मा जी ने प्रकट होकर वर माँगने के लिए कहा। रावण ने अमृत माँगा पर ब्रह्मा जी ने कहा कुछ और माँगों।ब्रह्मा जी ने प्रसन्न होकर कहा कि

जिन मस्तकों को तुम ने खोया है वो तुम्हें पुनः प्राप्त होंगे और तुम अपने मन रूप छद्म रूप बदल सकोगे।

रावण सुशील वेदपाठी,,महान वैज्ञानिक महान बुद्धिमान ,और पवित्र आत्मा था। आयुर्वेद के नाड़ी विज्ञान का ज्ञाता था।

दसों दिशाओं का ज्ञान होने से दशानन कहलाया ।विवेकी ,बुद्धिमान, दानी होने से रावण नाम मिला।शिव की भक्ति से आत्मा का उत्थान किया। लंकापति रावण गुणों की खान थे। आवश्यकता है उन्हें समग्रता से जानने की।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें